राजवंशीय थारू जनजाति एवं बौद्धों से इनका ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक सम्बन्ध

बीज शब्द : *थारू, नेपाल की जनजाति, नेपाली बौद्ध, जनजाति, राजवंश, राजपूत*

ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net

शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research

नेपाल और भारत के विस्तृत तराई क्षेत्र में फैले थारू जनजाति का संबंध राजपूत वंश अथवा क्षत्रिय वंश से रहा है। प्रस्तुत शोध आलेख इन थारू लोगों का संबंध बौद्धों से उद्घाटित करते हुए महाराणा प्रताप से भी जोड़ता है। तथा ऐतिहासिक पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर थारू जनजाति के विविध सन्दर्भो पर प्रकाश डालता है।

सूरज प्रताप
८५/१४, गौरी,
निकट- एस. आई. एल. सरोजिनी नगर कानपुर,
लखनऊ, उत्तर प्रदेश-226008

भारत देश, नेपाल एवं हिमालय की तराई मे रहने वाले थारू जनजाति के लोग अपनी विशेष संस्कृति एवं व्यवहार के लिए प्रसिद्ध हैं। उत्तर प्रदेश मे ये हिमालय के तराई भाग (नैनीताल व आस-पास का क्षेत्र) से गोरखपुर जिले तक फैले हुए हैं। भारत सरकार की रिपोर्ट के अनुसार इनकी जनसंख्या उत्तर प्रदेश में 83,544[1] तथा उत्तराखण्ड में 85665[2] है। नेपाल देश की सरकार ने थारू जनजाति को स्थायी नागरिकता प्रदान की है।[3]

थारू जनजाति के लोग शान्तिप्रिय व सरल एवं सहज स्वभाव के होते हैं। इनकी कई जातियां है जैसे राणा थारू, कथोरिया थारू, सोनहा, दंगौरा, पश्चुहन, रउतार, पुरबहा, आरकुतवा चितवानिया, कोचिला थारू, दानुवर, लम्पुचवा थारू इत्यादि। राणा थारू जिनका निवास कैलाई, कन्चनपुर तथा नैनीताल, उत्तराखण्ड तथा लखीमपुर खीरी की तराई में है ने स्वयं को राजपूत वंशीय घोषित किया है।[4]

पूर्व मे रहने वाले थारूओं ने कपिलवस्तु में रहने वाले शाक्य ओर कोलिय लोगों के वंशज होने का दावा किया है।[5] कुछ विद्वानों का कथन है कि राजपुताना के थार रेगिस्तान से म्लेच्छ मुसलमानों से हारकर वे हिमालय की तराई में आकर बस गये। वे लोग थार मरूस्थल से आने के कारण थारू कहलाए, किन्तु थारूओं की ऐतिहासिकता पूर्ण स्पष्ट नहीं है यदि शब्दों के आधार पर साम्य देखा जाये वो हमे थेरवाद, थार, थाई, थाईलैण्ड इत्यादि में सम्बन्ध दृष्टिगोचर होता है एक समय तो थारूओं का विस्तार दक्षिण-पूर्वी एशिया तक हो गया था, नेपाल मे भी इन थारू वंश के शासकों ने कई सौ वर्षो तक शासन किया था।

थारू शब्द की उत्पत्ति के बारे में विद्वानों में काफी मतभेद है। अवध गजेटियर के अनुसार, थारू का शाब्दिक अर्थ 'ठहरे' है अर्थात जो लोग तराई के वनों में आकर ठहर गये। नोल्स के अनुसार, थारू लोगों में अपहरण विवाह की प्रथा है पहाड़ी भाषा में 'थरूवा' का अर्थ 'पैडलर' है, अत: इन्हें थारू कहा जाने लगा। कुछ अन्य के अनुसार तराई एक-तर प्रदेश हैं अत: इसमें रहने वाले 'तर' हो गये और 'तरहुआ' कहे जाने लगे। ये भी मान्यता है कि ये शराब खूब पीते है, अत: मैदानों के क्षेत्रीय राजाओं ने इन्हें 'थारू' नाम दे दिया। इसी प्रकार थारू शब्द का अर्थ स्थानीय भाषा मे 'जंगल' होता है। इससे जंगल में रहने वाली जाति थारू कहलाती हैं कुछ विद्वान थारू मरूस्थल से आने के कारण थारू की उत्पत्ति मानते हैं।

थारू स्वयं अपने को मूलत: सिसोदिया वंशीय राजपूत कहते हैं। कुछ समय पूर्व तक थारू अपना वंशानुक्रम महिलाओं की ओर से खोजते थे। थारूओं के शारीरिक लक्षण प्रजातीय मिश्रण के द्योतक हैं। इसमें मंगोलीय तत्व की प्रधानता होते हुए भी अन्य भारतीय प्रजातियों से साम्य लक्षण मिलते हैं।

टर्नर (1931) के मत से विगत थारू समाज दो अर्द्धांशों में बँटा था। जिनमें से प्रत्येक के 6 गोत्र होते थे दोनों अर्द्धांशों मे पहले तो ऊंचे अर्द्धांशों मे नीचे अर्द्धांशों की कन्या का विवाह संभव था पर धीरे-धीरे दोनों अर्द्धांश अंतर्विवाही हो गये। -''काज'' और ''गोला'' अर्थात वधूमूल्य और कन्याअपहरण पद्धति से विवाह के स्थान पर अब थारूओं में भी सांस्कारिक विवाह होने लगे हैं। थारू अपने गोत्र में भी विवाह कर लेते हैं। देवर-भाभी का स्वच्छन्द व्यवहार भी यहाँ स्वीकृत है। इनके समाज में भी अंधविश्वास प्रचलित है, कहा जाता है कि जादू-टोने के बल पर थारू स्त्रियाँ बाहर के पुरूषों को पालतू पशुओं की भाँति बना लेती हैं।

ग्राम्य शासन में उनके यहाँ मुखिया, प्रधान, ठेकेदार, मुस्तजर, चपरासी, कोतवार तथा पुजारी वर्ग ''भर्रा'' विशेष महत्व रखते हैं थर्रा चिकित्सक का काम भी करता है।

थारू हिन्दू धर्म एवं बौद्ध धर्म को मानते हैं ये हिन्दुओं के सभी त्यौहार मनाते हैं किन्तु थारू जनजाति दीपावली को शोक पर्व के रूप में मनाते है।[6]

प्राचीन काल में वर्तमान गोरखपुर जिले के अन्तर्गत बस्ती, देवरिया, कुशीनगर व आजमगढ़ जिले सम्मिलित थे। 10 वीं शताब्दी में थारू राजा, मदन सिंह, गोरखपुर एवं उसके आस-पास के इलाके पर शासन कर रहा था।[7]

प्राचीन भारतीय संस्कृति में महाभारत का विशेष महत्व रहा है थारू लोग महाभारत से अपने सम्बन्ध को दर्शाते रहे हैं। डांग घाटी, नेपाल के थारू किसान अपनी लोक कला में महाभारत जीतने तथा देवताओं का आशीर्वाद पाने में अपनी लोक कला का प्रदर्शन करते है व थारू नृत्य महाभारत की घटनाओं का प्रहसन प्रदर्शित करते हैं। इनके 14 प्रकार के विभिन्न गानों का अनुवाद अंग्रेजी में हो चुका है, इन गानों में मुख्यत: पांच पाण्डवों एवं सौ कौरवों के बीच युद्ध की कहानी वर्णित है। 1993 में कुर्ट मेयर एवं पामेला डूयूल नेपाल तराई के अपने रिसर्च ट्रिप में पाया कि महाभारत को ये लोग ''बरका नाच'' या बड़ा नाच के रूप में प्रदर्शित करते रहे हैं।[8] वो भी पीढ़ी दर पीढ़ी से पुत्र को यह परम्परा प्राप्त होती रही है। अब इस तथ्य से यह तो स्पष्ट होता ही है कि महाभारत को अपनी परम्परा मानने वाले कभी न कभी प्राचीन काल में उससे जुड़े रहे होंगे। चूंकि 'युद्ध' क्षत्रिय धर्म रहा है अतएव इन्हें क्षत्रिय माना जा सकता है, क्योंकि प्राचीन भारत में भी युद्ध गीतों का विवरण मिलता है जो कि ज्यादातर क्षत्रिय लोग ही अपने युद्धों की विजय संस्मरणों को याद रखने व अपनी परम्परा व पीढ़ियों में पहुंचाने हेतु प्रदर्शित किया करते थे।

'राजपूत -आइडियाज अबाउन्ड' आर्टिकल में लेखक ने लिखा है कि राजा थारू पर पर हुए मानव विज्ञान अध्ययन में देखा गया कि 16 वीं शती में जब मुगल भारत आये उस समय भारत में उच्च वर्णीय राजपूत थे तब एक मुस्लिम शासक जो कि राजपूत कन्या से विवाह करना चाहता था, के कारण सभी राजपूत स्त्रियाँ एवं बच्चे तराई की ओर पलायन कर गये (तराई-भारत, नेपाल सीमा थी) एंव युद्ध लड़ने हेतु समस्त राजपूत पुरुषों को छोड़ गये थे। यह सुनने के पश्चात कि सभी राजपूत पुरुष युद्ध में मारे गये है थारू महिलाओं ने अपने उन दासों के साथ विवाह कर लिया जो कि उन के साथ आये एवं युद्ध से बच गये थे। विद्वानों का दावा है कि राणा थारू महिलाओं ने अपनी उच्च वर्गीय स्थिति एवं शाही वंशावली को बनाये रखा, इस प्रकार वे खुद से अलग थारू बने।[9]

'थारू' हिस्ट्री रिलेटिंग टू लार्ड बुद्ध एन्ड बुद्धिज्म, 12 जुलाई 2012 पत्र में लेखक लिखता है कि द्विवेदी (1955:11) 2500 वर्ष पूर्व थारूओं ने अपना राज्य स्थापित किया था एवं गौतम बुद्ध जैसे महान अवतारी पुरूषों को जन्म दिया जिन्होंने बौद्ध धर्म द्वारा विश्व का महान कल्याण किया। प्रोफेसर फ्यूहरर (1972:45) ने भी इसका समर्थन किया उनके अनुसार, शाक्यों ने पौराणिक आर्य राजा इक्ष्वांकु या ओकाका के वंशज होने का दावा किया है।[10] इसी तरह लेख मे शाक्यों को थारू माना गया है।

टी0 एन0 पन्जीयर ने भी पता लगाया है कि कपिलवस्तु के चारों तरफ बसे हुए थारूओं ने भगवान बुद्ध के वंशज होने का दावा किया है। अपने अगले लेख में (1994:54) उन्होंने फिर से बताया बुद्ध ने जो पहला मत प्रतिपादित किया वह 'थेरवाद' कहलाया एवं पालि भाषा में इसे 'थेरगाथा' कहा गया जिसका अर्थ थारू-को-कथा (अर्थात् थारू की कहानी) है। अन्य विद्वान प्रजितार ने अपनी पुस्तक 'द हिस्टोरिकल ट्रेडीशन ऑफ इण्डिया' में कहा कि अगर कोई अवशेष भगवान बुद्ध के रूप मे बचा है तो थारू है। तीसरा प्रमाण जो कि बुद्ध धर्म में नालन्दा यूनीवर्सिटी के प्रोफेसर द्वारा उल्लिखित किया गया है कि थारू भगवान बुद्ध के वंशज हैं।

फ्रेंच इतिहासकार सिल्वन लेवी उद्धृत चौधरी, एस. एल. (1999) ने उल्लेख किया है कि अशोक महान भी थारू समुदाय मे पैदा हुआ था अशोक महान पिपलीकानन चंपारण में पैदा हुआ था एवं बौद्ध था। इस प्रकार यहाँ वर्णित सभी लेखकों ने एक ही मत व्यक्त किया है कि बुद्ध थारूओं के वंशज थे जो कि तराई एवं आंतरिक क्षेत्र में स्वदेशी लोगों के अग्रणी रहे हैं।[11]

डॉ0 के0 पी0 जायसवाल के अनुसार, थारू लोगों ने नेपाल मे अपना राज्य स्थापित किया और कम से कम आठ शासकों ने लगभग 350 वर्षो तक शासन किया इन शासकों की सूची और सिंहासनारोहण के वर्ष इस प्रकार उल्लिखित है।[12]

थुष्ख	-	490 ई0 पू0
थुष्क पंचम	-	415 ई0 पू0
थुन्क (थुम्म)	-	340 ई0 पू0
स्थुन्कों	-	265 ई0 पू0

थुर	-	215 ई0 पू0
थम्मू	-	190 ई0 पू0
थोर	-	165 ई0 पू0
थोको	-	140 ई0 पू0

पालि बौद्ध ग्रन्थ दीघ निकाय में थारू लोगों का 'थुलू'[13] नाम से उल्लेख मिलता है। उस काल मे उनका एक अलग राज्य (जनपद) था जिसकी राजधानी उत्तरका नामक निगम (कस्बा), यथा - ''उत्तरका नाम थुलून निगमों''[14] था।

बौद्ध साहित्य का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि थारू लोग तथागत बुद्ध के अनुयायी बने थे जो कि बुद्ध के धर्मोपदेश सुनकर बुद्ध धर्म संघ की शरण प्राप्त किये थे। दीघ-निकाय[15] में यह विवरण प्राप्त होता है कि उत्तर निगम में ही "अचेल कोर खत्तिय कक्कुर व्रतिक"[16] नामक एक व्यक्ति रहता था जो वस्त्र को धारण नहीं करता था इसी कारण वह अचेल और कुक्कर की भांति जीवन बिताता था इसी कारण वह कुक्कुर व्रतिक कहलाता था। इसके अतिरिक्त वह दोनों घुटनों और हाथों के बल बैठता था एवं जमीन पर फेंके गये अन्न को मुँह में रखकर चबाता था। उसकी इस दिनचर्या से भ्रमवंश लोग उसे बड़ा ऋषि, मुनि तपस्वी समझ बैठे थे।

तथागत बुद्ध को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने थारूओं को उपदेश देते हुए कहा कि ये सभी बातें अर्थात वस्त्र धारण न करना, हाथ पैरों के बल पशुओं की भांति चलना, फेंके गये भोजन पर जीविका चलाना आदि बातें, मोक्ष (निर्वाण) की ओर ले जाने वाली नहीं हैं। ऐसी चर्या निर्वाण मार्ग के बिल्कुल विपरीत जाती हैं।

बुद्ध के इस उपदेश को सुनकर थारू लोगों का भ्रम व अंधविश्वास दूर हुआ और वे तथागत के अनुयायी हुए।

ह्वेनसांग सातवीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में हर्षवर्धन के समय धर्म यात्रा पर भारत आया था, इसने सम्राट अशोक द्वारा बनवाया हुआ 200 फीट ऊँचा स्तूप विद्यमान देखा था, यह उसी स्थान पर था जहाँ महामानव बुद्ध ने धर्म के विभिन्न विषयों पर थारूओं को एक महीने तक उपदेश दिये थे[17], इसका उसने विवरण दिया है।

दीघ निकाय में वर्णित थारू देश (थुलुस जनपद) की राजधानी उत्तरका निगम की पहचान के सन्दर्भ में ह्वेनसांग ने अपनी यात्रा के विवरण से स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उसके द्वारा वर्णित जनपदों मे से मण्डावर (मा-ती-पो-लो)[18] ब्रह्मपुर (पो-लो-हिह-मो-पु-लो)[19] तथा गोविषाण (किउ-पी-खांगना)[20] प्रमुख नगर थे। ह्वेनसांग द्वारा वर्णित गोविषाण नगर थुलुस (थारूओं की राजधानी उत्तरका निगम प्रतीत होती है। ह्वेनसांग (मा-ती-पो-लो) मातीपुर या मण्डावर जिला बिजनौर से ब्रह्मपुर में (पो-लो-हिह-मो-पु-लो) गया था। ब्रह्मपुर में उसने 5 बौद्ध विहार तथा 10 ब्राह्मण मन्दिर देखे थे।[21]

ब्रह्मपुर के बाद चीनी यात्री किउ-पी-खांगना जनपद आया था।[22] यह जनपद मातीपुर से पुर्वोत्तर में लगभग 67 मील (400 ली0) दूर था। महोदय एम0 जूनियन ने किउ-पी खांगना की पहचान गोविषाण से की है।[23] ह्वेनसांग के अनुसार, यह जनपद 2000 ली (लगभग 333 मील) के विस्तार में स्थित था। इसकी राजधानी 14-15 ली अर्थात लगभग 3 मील के घेरे में स्थित थी।[24] कनिंघम महोदय का विचार है कि तत्कालीन किउ-पी-खांगना (गोविषाण) जनपद में वर्तमान काशीपुर रामपुर और पीलीभीत सम्मिलित रहे होंगे।[25]

कनिंघम ने ह्वेनसांग द्वारा वर्णित अशोकीय स्तूप की पहचान जागेश्वर महादेव के दक्षिण-पश्चिम खर्गपुर के पास स्थित ऊँचे टीले से की है। यह प्राचीन स्तूप 1862-63 ई0 में जब उन्होंने इसका सर्वेक्षण किया था तब 20 फीट ऊँचा था और ठोस ईंटों का बना हुआ था उसका उर्ध्वमुखी निचला व्यास 200 फीट था और ऊपरी भाग 60 फीट मोटा था, चारों ओर से यह टूटा-फूटा था।

इसी प्रकार कनिंघम महोदय प्राचीन गोविषाण नगर की पहचान वर्तमान काशीपुर के निकट उजैन ग्राम (जिला- नैनीताल) से करते हैं।[26] अब देखने वाली बात यह है कि इसके आस-पास का भू-भाग इस समय भी प्रसिद्ध थारू क्षेत्र है। डॉ0 अंगने लाल बताते हैं कि उजैन ग्राम में प्राचीन किले के अवशेष वर्तमान में भी विद्यमान हैं। ये अवशेष पूर्व-पश्चिम में 3000 फीट की लम्बाई तथा 1500 फीट की चौड़ाई तथा घेरे में कुल 2 मील हैं। तुलनीय रूप में ह्वेनसांग ने गोविषाण नगर का घेरा 2.5 मील (14-15 ली) बतलाया था। इसके तटबन्ध बनाने में जिन ईंटों का प्रयोग किया गया है वह 15 इंच लम्बी 10 इंच चौड़ी और 2.5 इंच मोटी है। ये ईंटे स्वयं प्राचीनता की प्रमाण है[27], जो मौर्य युग की ओर संकेत करते हैं। गोविषाण जनपद पश्चिम में राम गंगा से लेकर पूर्व में शारदा या घाघरा नदी तक एवं दक्षिण में बरेली तक फैला रहा होगा। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी गोविषाण जनपद की राजधानी को सघन एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से सम्पन्न बतलाया है। ह्वेनसांग ने इस नगर में दो बौद्ध भिक्षुओं के संघाराम देखे थे जिसमें 100 हीनयानी बौद्ध भिक्षु रहते थे। नगर में अन्य धर्मों के 30 मंदिरों का वर्णन ह्वेंसांग ने किया है जिनकी विशेषता यह थी कि इन 30 मंदिरों में दर्शन पूजन के लिए किसी प्रकार का भेदभाव नही किया जाता था।

'वाइस आफॅ थारू' पत्र में लेखक लिखता है कि तारानन्द मिश्रा द्वारा लिखित लेख तिलौरकोट खुदाई (02023-2029 वि.सं) पढ़ने के बाद एवं एक अन्य पुस्तक - ''द ग्रेट संस ऑफ थारूस : शाक्य मुनि बुद्ध एवं अशोक महान'' जिसके लेखक सुबोध कुमार सिंह है। मैं तिलोरकोट जाने हेतु अत्यन्त उत्सुक था जहाँ भगवान बुद्ध ने अपने 29 वर्ष बिताये थे।[28]

लेखक के कथन से स्पष्ट है कि बुद्ध एवं अशोक को थारू वंश का माना गया है जो कि सीधा राजवंशीय सम्बन्ध बुद्ध से स्पष्ट करता है व बुद्ध को भी थारू घोषित करता है।

थारूओं के सम्बन्ध में जे. सी. नेसफील्ड ने कलकत्ता रिव्यू (1885) में लिखा है कि एक और परम्परा के अनुसार, कन्नौज के बौद्ध वंश के पतन के बाद थारू पहाड़ियों से उतरा और अयोध्या पर कब्जा कर लिया।[28] इससे थारूओं के राजपूत वंशीय होने का दावा पता चलता है किन्तु 'बुचनन' ने अपनी पुस्तक 'पूर्वी भारत' में 'थारू राजपूतों के वंशज हैं' के दावे का खण्डन किया है। द रायल ऐशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल (1942) में छपे लेख 'द थारूस एन्ड दिअर ब्लड ग्रुप' जिसके लेखक डी. एन. मजूमदार थे ने पाया कि 'थारू सुनिश्चित रूप मे मंगोलियन जनजाति है', किन्तु इनमें इण्डो आर्यन संस्कृति एवं अन्य भारतीय लक्षण स्पष्ट रहे हैं तो इन्हें केवल मंगोलियन मानना ही पर्याप्त नहीं होगा किन्तु तथ्यों से यह स्पष्ट जरूर होता है कि ये जाति भी राजवंशीय अस्तित्व जरूर रखती रही थी।

समय के साथ भारतवर्ष से बौद्ध धर्म अत्यन्त संकुचित रह गया व कुछ ही स्थानों तक सीमित रह गया, जिसका प्रभाव शायद इस थारू जनजाति पर भी पड़ा होगा यही कारण है कि जिस प्रकार भारत में बौद्ध मतावलम्बिओं की संख्या कम है उसी प्रकार थारू जनजाति में भी, दोनों में ही हिन्दुओं का बाहुल्य है।

उत्तरांचल के उधमसिंह नगर में बसी थारू जनजाति के लोग स्वयं को महाराणा प्रताप की सेना मानते हैं। महाराणा प्रताप व मानसिंह के बीच हुए हल्दी घाटी संग्राम (1576) में हारने के बाद राजपूत राज्यों के 12 राजपरिवार हिमालय की तराई क्षेत्र में आकर बस गये। यहीं से थारू जनजाति की व्युत्पत्ति मानी जाती है।[29] थारू महिलाओं के कपड़ों, उनकी वेशभूषा एवं जवाहरातों की बनावट और पहनावा से राजस्थानी संस्कृति की झलक उनमें मिलती-जुलती है।[30]

इन सभी विवरणों को देखने पर एक बात स्पष्ट होती है कि थारू जनजाति का राजवंशीय सम्बन्ध प्राचीनकाल में था इसके अतिरिक्त वे प्राचीन बौद्ध धर्म को मानने वाले लोग थे। यद्यपि यह स्पष्ट नहीं है कि ये थारू जनजाति कब अपने राजवंशीय अस्तित्व को छोड़कर साधारण हो गई या इन्होंने कब अपनी प्रगतिशील व समृद्धिशाली बौद्ध संस्कृति व शासक पद को त्यागा होगा अथवा इनसे छीन लिया गया होगा, परन्तु उपर्युक्त दिये गये संक्षिप्त विवरण से यह जरूर स्पष्ट होता है कि थारू जनजाति (ट्राइब) प्राचीन भारत के बौद्ध लोग हैं जिनका इतिहास स्वयं अपने में 2600 वर्ष पुरानी ऐतिहासिकता संजोये हुए है, थारू जनजाति के रहने के सभी स्थान (वर्तमान थारू क्षेत्र), ऐतिहासिक उत्तरका निगम, खन्डहर एवं प्राचीन टीले इन्हें बौद्ध दर्शाते हैं। आज की मूलभूत आवश्यकता यह है कि इन प्राचीन बौद्ध केन्द्रों एवं स्थानों का संरक्षण हो। पुरातत्ववेत्ताओं व इतिहासविदों की जिम्मेदारी है। यह पुरातत्ववेत्ताओं का फावड़ा यहाँ चले और इन खण्डहरों व टीलों के रहस्यों का उद्घाटन हो एवं प्राचीन बौद्ध धर्म को मानने वाली ऐतिहासिक थारू राजवंशीय जाति की विश्व के समक्ष पुरातन गौरव, बौद्ध परम्परा एवं राजवंशीय स्थिति को रख सके।

सन्दर्भः-

1. ऑफिस ऑफ द रेजिस्टरार जनरल, इण्डिया, 2001 ''उ0 प्र0 डाटा हाइलाट्स : द शेड्यूल ट्राइब्स, सेन्सस ऑफ इण्डिया, 2000
2. ऑफिस ऑफ द रेजिस्टरार जनरल इण्डिया, 2001 उत्तरांचल डाटा हालाइट्स : द शेड्यूल ट्राइब्स सेन्सस ऑफ इण्डिया, 2001 (pdf) Retrieved 2008/03/16
3. लेविस एम0 पी0, 2009, थारू चितवानिया: एं लैंग्वेज ऑफ नेपाल, Ethnologue: Languages of the world dalas: SIL International.
4. लेविस. एम. पी., जी. एफ. सिमन्स एवं सी. डी. फेनिग, ई डी एस, 2014, थारू राना : ए लैग्वेज ऑफ नेपाल, इश्नोलौग्यू : लैंग्वेज ऑफ द वर्ड, सेवेन्टीन्थ ऐडीसन, डैल्लास टेक्सास, एस आई एल इन्टरनेशनल ऑनलाइन वर्जन।
5. Skar. H. O. (1995), मिथ्स ऑफ ओरिजिन : द जनजाति मूवमेन्ट लोकल ट्रेडीशन्स, नेशनलिज्म एन्ड आइडेन्ट्टीज इन नेपाल, कॉन्ट्रीब्यूशन टू नेपालीज स्ट्डीज 22(1) : 31-42
6. थारू, विकिपीडिया (हिन्दी)।
7. गोरखपुर, विकिपीडिया।
8. Kurt W. Meyer & Pamela Deuel, 'Mahabharata: The Tharu Barka Naach', February 4, 1998, ISBN - 10 : 0966674200.
9. Ayushmapandey.com/tag/rajputs/
10. Tharu-sangam.blogspot.com/2012/07/tharus-history-relating-to-lord-buddha_12.html?
11. वही
12. जायसवाल, डॉ. के0 पी0, क्रोनोलॉजी ऑफ नेपाल, पृ0 109-110।
13. दीघनिकाय, जिल्द 3/6-9, हिन्दी अनुवाद, पृ0 216-17।
14. वही, जिल्द 3/6/24-25, हिन्दी अनुवाद, पृ0 216-17 टिप्पणी - प्राचीन काल मे छोटे नगर को निगम कहा जाता था तो वर्तमान कस्बे के समान होता था।
15. दीघनिकाय, जिल्द 316-9, हिन्दी अनुवाद पृ0 216-17।
16. दीघनिकाय, हिन्दी अनुवाद, पृ0 216-17।
17. सैमुअल बील, चाइनीज एकाउन्टस ऑफ इण्डिया, जिल्द 2/227-228, कलकत्ता 1958
18. वही जिल्द 2/220
19. वही जिल्द 2/227
20. वही जिल्द 2/227
21. वही जिल्द 2/226
22. वही जिल्द 2/227
23. वही जिल्द 2/231, ऐलेग्जेन्डर कनिघम, ऐन्शियन्ट ज्योग्रेफी ऑफ इण्डिया, वाराणसी, 1963, पृष्ठ 300
24. सैमुअल बील, चाइनीज एकाउन्टस ऑफ इण्डिया, जिल्द 2/227, कलकत्ता 1958।
25. ऐलेग्जेन्डर कनिंघम, ऐन्शियन्ट ज्योग्रेफी ऑफ इण्डिया, वाराणसी, 1963, पृ0 302
26. कनिंघम, ए0 ज्यो0 इ0, पृ0 301
27. वही, पृ0 301-302
28. Tharucommunity.com/history-of-tharus
29. http://avadhbhumi.wordpress.com/tag/Fkk:&tutkfrA
30. up.chauthiduniya.com/2015/03/raniyon-ka-haal-daasi-jaisa.html

◆◆◆